



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 781]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 27, 2007/आषाढ़ 6, 1929

No. 781]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 27, 2007/ASADHA 6, 1929

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 जून, 2007

आय-कर

का.आ. 1044(अ).—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 40क की उप-धारा (3) के परंतुक के साथ पठित धारा 295 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, आय-कर नियम, 1962 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात् :-

- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम आय-कर (आठवां संशोधन) नियम, 2007 है।
- (2) ये निर्धारण वर्ष 2008-2009 से प्रवृत्त होंगे।
2. आय-कर नियम, 1962 के नियम 6घघ के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात् :-

“वे मामले और परिस्थितियां, जिनमें बीस हजार रुपये से अधिक की रकम में भुगतान किसी बैंक के नाम लिखे गए पाने वाले के खाते में देय बैंक से या पाने वाले के खाते में देय बैंक ड्राफ्ट से भिन्न रूप में किया जा सकता है।

6घघ. धारा 40क की उप-धारा (3) के खण्ड (क) के अधीन वहां इंकार नहीं किया जाएगा और धारा 40क की उप-धारा (3) के खण्ड (ख) के अधीन किसी भुगतान को कारबार या वृत्ति का लाभ नहीं समझा जाएगा जहां इसमें विनिर्दिष्ट मामलों और परिस्थितियों में बीस हजार रुपये से अधिक की राशि में कोई भुगतान किसी बैंक के नाम लिखे गए पाने वाले के खाते में देय बैंक से या पाने वाले के खाते में देय बैंक ड्राफ्ट द्वारा किए जाने से अन्यथा किया जाता है, अर्थात् :-

(क) जहां भुगतान निम्नलिखित को किया जाता है—

- (i) बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 5 के खण्ड (ग) में यथा परिभाषित भारतीय रिजर्व बैंक या किसी बैंककारी कम्पनी;
- (ii) भारतीय स्टेट बैंक (समनुषंगी बैंक) अधिनियम, 1959 (1959 का 38) की धारा 2 में यथा परिभाषित भारतीय स्टेट बैंक या किसी समनुषंगी बैंक;

- (iii) किसी सहकारी बैंक या भूमि बंधक बैंक;
 - (iv) बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 56 के अधीन यथा परिभाषित कोई प्राथमिक कृषि प्रत्यय सोसाइटी या कोई प्राथमिक प्रत्यय सोसाइटी;
 - (v) जीवन बीमा निगम अधिनियम, 1956 (1956 का 31) की धारा 3 के अधीन स्थापित भारतीय जीवन बीमा निगम;
 - (ख) जहां भुगतान सरकार को किया जाता है और इसके द्वारा बनाए गए नियमों के अंतर्गत वहां ऐसा भुगतान वैध मुद्रा में किया जाना अपेक्षित है;
 - (ग) जहां संदाय—
 - (i) किसी बैंक के माध्यम से प्रत्यय-पत्र व्यवस्था;
 - (ii) किसी बैंक के माध्यम से डाक या टेलीग्राफिक अंतरण;
 - (iii) एक बैंक में किसी खाते से उसी या किसी अन्य बैंक में किसी अन्य खाते में बही समायोजन;
 - (iv) केवल किसी बैंक को भुगतान योग्य बनाए गए विनियम पत्र;
 - (v) किसी बैंक के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक निकासी का प्रयोग;
 - (vi) क्रेडिट कार्ड;
 - (vii) डेबिट कार्ड,
- द्वारा किया जाता है।

स्पष्टीकरण—इस खण्ड और खण्ड (छ) के प्रयोजनों के लिए "बैंक" पद से खण्ड (क) के उप-खण्ड (i) से उप-खण्ड (iv) में निर्दिष्ट कोई बैंक, बैंककारी कम्पनी या सोसाइटी अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत कोई ऐसा बैंक भी है जो [बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 5 के खण्ड (ग) में यथा परिभाषित बैंककारी कम्पनी नहीं है] चाहे वह नियमित हो या नहीं, जो भारत से बाहर स्थापित किया गया है;

(घ) जहां भुगतान निर्धारिती द्वारा प्रदाय किए गए किसी माल या उसके द्वारा दी गई सेवाओं के लिए आदाता द्वारा उपगत किसी देनदानी की रकम के प्रति समायोजन के माध्यम से ऐसे आदाता को किया जाता है;

(ङ) जहां ऐसा भुगतान—

- (i) कृषि या वन उपज; या
- (ii) पशुपालन (जिसमें पशुधन, मांस, चर्म और खाल भी हैं) या डेयरी या कुक्कुट पालन का उत्पादन; या
- (iii) मत्स्य या मत्स्य उत्पाद; या
- (iv) बागवानी या मधुमक्खी पालन के उत्पादों,

के क्रय के लिए ऐसी चीजों, उत्पादन या उत्पादों के खंतिहर, उगाने वाले या उत्पादक को किया जाता है;

(च) जहां ऐसा भुगतान ऐसे उत्पादों के उत्पादक को किसी कुटीर उद्योग में विद्युत की सहायता के बिना विनिर्मित या प्रसंस्कृत उत्पादों के क्रय के लिए किया जाता है;

(छ) जहां ऐसा भुगतान, किसी ऐसे व्यक्ति को, जो ऐसे किसी ग्राम या कस्बे में मामूली तौर पर निवास करता है या कोई कारबार, व्यवसाय या वृत्ति चला रहा है, ऐसे ग्राम या कस्बे में किया जाता है जो कि भुगतान की तारीख को किसी बैंक द्वारा सेवित नहीं है;

(ज) जहां कोई भुगतान उपदान, छंटनी प्रतिकर या समरूप सेवांत प्रमुविधा के कारण निर्धारिती के किसी कर्मचारी या किसी ऐसे कर्मचारी के उत्तराधिकारी को ऐसे कर्मचारी की सेवानिवृत्ति, छंटनी, त्यागपत्र, निर्मुक्ति या मृत्यु पर या उसके संबंध में किया जाता है, और कर्मचारी या उसके उत्तराधिकारी को संदंय ऐसी राशि का योग पचास हजार रुपए से अधिक है;

(झ) जहां भुगतान निर्धारिती द्वारा अधिनियम की धारा 192 के उपबंधों के अनुसार वेतन से आय-कर की कटौती करने के पश्चात् अपने कर्मचारी को वेतन के रूप में किया जाता है और जब ऐसा कर्मचारी—

- (i) अपने कर्तव्य के सामान्य स्थान से भिन्न किसी स्थान पर या पोत पर पंद्रह दिन या अधिक की निरंतर अवधि के लिए तैनात किया गया है; और

- (ii) ऐसे स्थान या पोत पर किसी बैंक में कोई खाता नहीं रखता है;
- (ज) जहां भुगतान ऐसे किसी दिन किया जाना अपेक्षित था जिसको बैंक छुट्टी या हड़ताल के कारण बंद थे;
- (ट) जहां भुगतान किसी व्यक्ति द्वारा अपने ऐसे अधिकर्ता को किया जाता है जिससे ऐसे व्यक्ति की ओर से माल या सेवाओं के लिए नकद भुगतान कराया जाना अपेक्षित है;
- (ठ) जहां भुगतान किसी प्राधिकृत व्यवहारी या धन परिवर्तक द्वारा अपने कारबार के सामान्य अनुक्रम में विदेशी मुद्रा या यात्री चेक के क्रय के लिए किया जाता है।

स्पष्टीकरण—इस खण्ड के प्रयोजन के लिए “प्राधिकृत व्यवहारी” या “धन परिवर्तक” पद से तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन विदेशी मुद्रा या विदेशी विनिमय में व्यवहार करने के लिए किसी प्राधिकृत व्यवहारी या धन परिवर्तक के रूप में प्राधिकृत व्यक्ति अभिप्रेत है।

[अधिसूचना सं. 208/2007/फा. सं. 142/4/2007-टीपीएल]

पंकज जिंदल, अवर सचिव

टिप्पण : मूल नियम अधिसूचना सं. का.आ. 969(अ), तारीख 26 मार्च, 1962 द्वारा प्रकाशित किए गए थे और उनमें अंतिम संशोधन आयकर (सातवां संशोधन) नियम, 2007 द्वारा अधिसूचना सं. का.आ. 853(अ), तारीख 30-5-2007 द्वारा किया गया था।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

(CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 27th June, 2007

INCOME-TAX

S.O. 1044(E).— In exercise of the powers conferred by Section 295 read with proviso to sub-section (3) of Section 40A of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Income-tax Rules, 1962, namely :—

1. (1) These rules may be called the Income-tax (8th Amendment) Rules, 2007.
- (2) They shall come into force with effect from the assessment year 2008-09.
2. In the Income-tax Rules, 1962, for rule 6DD, the following rule shall be substituted, namely :—

‘Cases and circumstances in which payment in a sum exceeding twenty thousand rupees may be made otherwise than by an account payee cheque drawn on a bank or account payee bank draft.

6DD. No disallowance under clause (a) of sub-section (3) of Section 40A shall be made and no payment shall be deemed to be the profits and gains of business or profession under clause (b) of sub-section (3) of Section 40A where any payment in a sum exceeding twenty thousand rupees is made otherwise than by an account payee cheque drawn on a bank or account payee bank draft in the cases and circumstances specified hereunder, namely :—

(a) where the payment is made to—

- (i) the Reserve Bank of India or any banking company as defined in clause (c) of Section 5 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949);
- (ii) the State Bank of India or any subsidiary bank as defined in Section 2 of the State Bank of India (Subsidiary Banks) Act, 1959 (38 of 1959);
- (iii) any co-operative bank or land mortgage bank;
- (iv) any primary agricultural credit society or any primary credit society as defined under Section 56 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949);
- (v) the Life Insurance Corporation of India established under Section 3 of the Life Insurance Corporation Act, 1956 (31 of 1956);

(b) where the payment is made to the Government and, under the rules framed by it, such payment is required to be made in legal tender;

- (c) where the payment is made by—
- (i) any letter of credit arrangements through a bank;
 - (ii) a mail or telegraphic transfer through a bank;
 - (iii) a book adjustment from any account in a bank to any other account in that or any other bank;
 - (iv) a bill of exchange made payable only to a bank;
 - (v) the use of electronic clearing system through a bank account;
 - (vi) a credit card;
 - (vii) a debit card.

Explanation.—For the purposes of this clause and clause (g), the term “bank” means any bank, banking company or society referred to in sub-clauses (i) to (iv) of clause (a) and includes any bank [not being a banking company as defined in clause (c) of Section 5 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949)], whether incorporated or not, which is established outside India;

- (d) where the payment is made by way of adjustment against the amount of any liability incurred by the payee for any goods supplied or services rendered by the assessee to such payee;
- (e) where the payment is made for the purchase of—
- (i) agricultural or forest produce; or
 - (ii) the produce of animal husbandry (including livestock, meat, hides and skins) or dairy or poultry farming; or
 - (iii) fish or fish products; or
 - (iv) the products of horticulture or apiculture.
- to the cultivator, grower or producer of such articles, produce or products;
- (f) where the payment is made for the purchase of the products manufactured or processed without the aid of power in a cottage industry, to the producer of such products;
- (g) where the payment is made in a village or town, which on the date of such payment is not served by any bank, to any person who ordinarily resides, or is carrying on any business, profession or vocation, in any such village or town;
- (h) where any payment is made to an employee of the assessee or the heir of any such employee, on or in connection with the retirement, retrenchment, resignation, discharge or death of such employee, on account of gratuity, retrenchment compensation or similar terminal benefit and the aggregate of such sums payable to the employee or his heir does not exceed fifty thousand rupees;
- (i) where the payment is made by an assessee by way of salary to his employee after deducting the income-tax from salary in accordance with the provisions of Section 192 of the Act, and when such employee—
- (i) is temporarily posted for a continuous period of fifteen days or more in a place other than his normal place of duty or on a ship; and
 - (ii) does not maintain any account in any bank at such place or ship;
- (j) where the payment was required to be made on a day on which the banks were closed either on account of holiday or strike;
- (k) where the payment is made by any person to his agent who is required to make payment in cash for goods or services on behalf of such person;
- (l) where the payment is made by an authorised dealer or a money changer against purchase of foreign currency or travellers cheques in the normal course of his business.

Explanation.—For the purposes of this clause, the expressions “authorised dealer” or “money changer” means a person authorised as an authorised dealer or a money changer to deal in foreign currency or foreign exchange under any law for the time being in force.

[Notification No. 208/2007/F. No. 142/4/2007-TPL]

PANKAJ JINDAL, Under Secy.

Note :— The principal rules were published *vide* notification number S.O. 969(E), dated the 26th March, 1962 and last amended by Income-tax (7th Amendment) Rules, 2007 *vide* notification number S.O. 853 (E) dated the 30-5-2007.